RNI-UTTHIN/2013/51284

|| श्रीः ||

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

ISSN-0975-8739

श्री जयराम आश्रम
भीमगोडा, हरिद्वार-249401
: (01334)-261735, फैक्स : 260334
ईमेल : jairamsandesh@gmail.com

पत्राङ्क JRA/LAB/09/01

दिनाङ्क 28/02/2021

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष
जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० देवी प्रसाद त्रिपाठी (हरिद्वार)
डॉ० वाचस्पति मिश्र (लखनऊ)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशंकर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परिक्षक मण्डल
प्रो० जे. के. गोदियाल (पौड़ी)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

मान्यवर,

सादर प्रणाम !

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं लय के अधिपति भगवान् सदाशिव सम्पूर्ण विद्याओं के अधिष्ठाता, समस्त भूतों के अधीश्वर, परम कल्याण एवं सुख के मूल स्रोत हैं। भगवान् भोलेनाथ के विग्रहरूपों में लिङ्गरूप की महती महिमा है, ऋषियों-महर्षियों तथा समस्त शिवभक्तों की मनीषा में भगवान् सदाशिव के लिङ्गरूप की साधना ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रतिष्ठित है। भगवान् शिव का जिन पवित्र स्थलों में प्राकट्य हुआ, उन स्थलों में ज्योतिर्लिंग के ही पूजन एवं दर्शन होते हैं।

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥

अतः भगवान् शिव के दिव्य विग्रहस्वरूप द्वादश ज्योतिर्लिंगों की शास्त्रों में वर्णित महिमा को प्रतिपादित करने हेतु जयराम सन्देश पत्रिका का अग्रिम अङ्क "द्वादशज्योतिर्लिंग विशेषांक" के रूप में प्रकाशित किये जाने का प्रस्ताव है। इस सन्दर्भ में आप अपनी वैदुष्यपूर्ण, शास्त्रसम्मत, सरल बोधगम्य, सन्दर्भसहित प्रेरक रचनाएँ 30 अप्रैल 2021 तक प्रकाशनार्थ प्रेषित करने की कृपा करें।

विशेषः - कृपया अपना शोधपत्र A Gautam अथवा Kruti Dev 10 में टाइप किया हुआ अथवा सुस्पष्ट अक्षरों में पृष्ठ के एक भाग में लिखा हुआ (न्यूनतम 1500 शब्दों में) ई-मेल अथवा डाक द्वारा प्रेषित करने का कष्ट करें।

साभार!

भवदीय

(डॉ० शिवशंकर मिश्र)
सम्पादक-जयराम संदेश
(ISSN-0975-8739)